NAME :- PALAK COURSE :- BA (SANSKRIT HONS.)

PAPER NAME :- ACTING AND SCRIPT WRITING PAPER CODE :- 12133901

ROLL NO :- SKT/19/29 YEAR: SEMESTER :- 3rd SEM.

TEACHER INCHARGE :- DR. HARSHA KUMARI MAM.

अभिनय कितने प्रकार के होते हैं :-

∴ अभिनय चार प्रकार के होते हैं :-

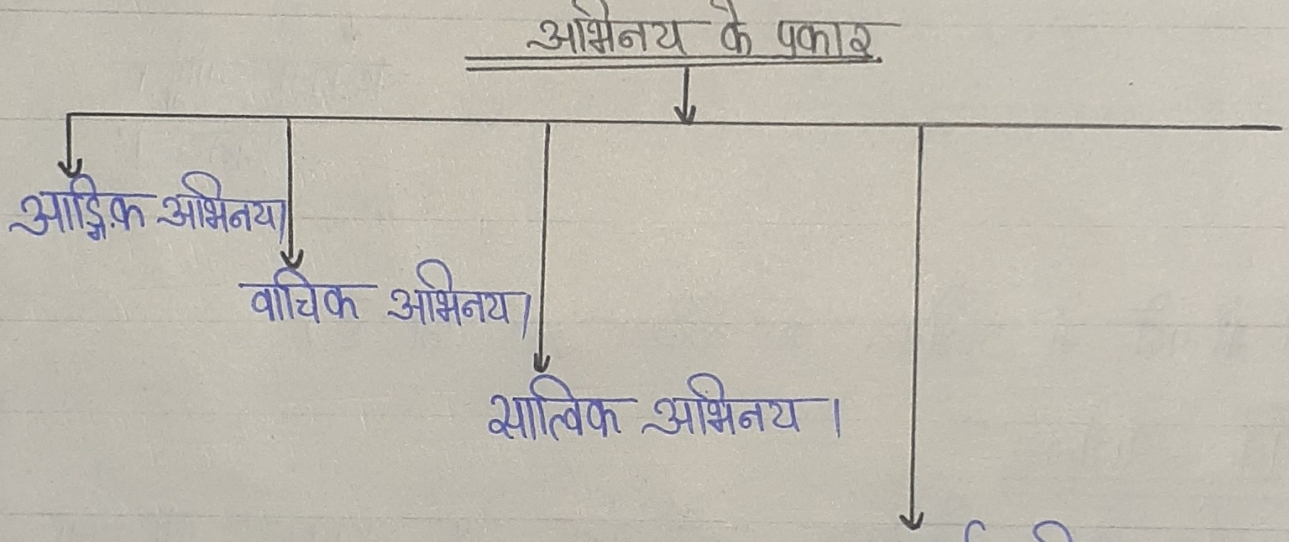

अभिनय के इन्हीं प्रकारों का प्रयोग में सामाजिक को लगता है। कि हम वस्तुत उस जमाने (युग) और परिस्थिति में पहुँचकर पात्रो के व्यवहारों का अनुभव कर रहे हैं।

∴ इन सभी अंगों का विस्तार से वर्णन :-

1) आङ्गिक अभिनय

अभिनेताओं के द्वारा हाथ, पैर, कमर, सिर आदि की चेष्टाओं के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

इसके भी तीन भेद है :-

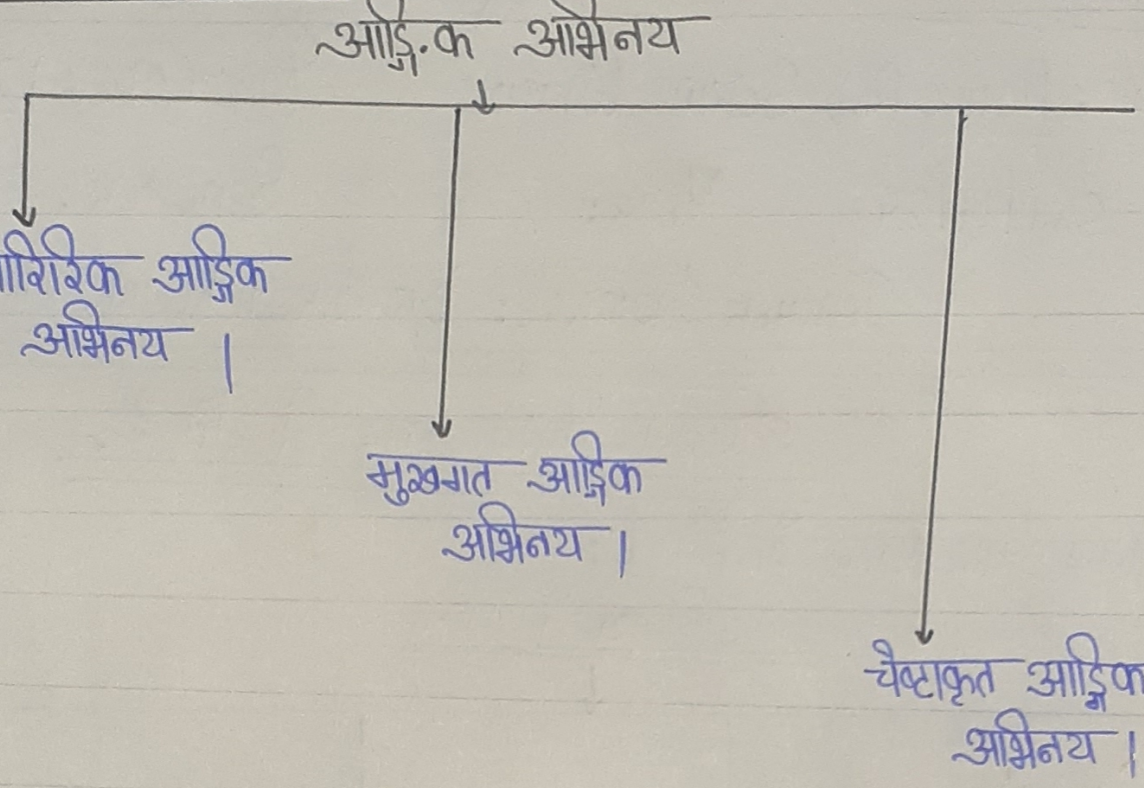

इनके भी भेदपदों में अभिनय का वैविध्य ज्ञात होता है।

∴ वाचिक अभिनय

इनके अंतर्गत काव्य के गुण, छन्दोविधान, दोष, अंलकार तथा भाषा निहित है। अभिनेताओं के द्वारा नाटक का अश इसी अभिनय के द्वारा प्रकट होता है। संस्कृत तथा प्राकृत भेदों का विवेचन इसी अभिनय के दृष्टि से किया था। कुछ प्राकृत में दो से सेनी महाराष्ट्री मगधी आदि रूपों का प्रयोग करेगा।

∴ सात्विक अभिनय

जब किसी भाव की अभिव्यक्ति होती है। उसे सात्विक अभिनय कहते है। शरीर में सात्विक की वृद्धि से स्वभावत: जन्म लेने के कारण से, 'सात्विक' गुण या अभिनय कहलाते है। जिससे रसोद्भावन में सुविधा होती है।

∴ आहार्य अभिनय :-

किसी व्यक्ति कि वेश-भूषा कि सजावट व पहनावे को आहार्य अभिनय कहते है। जिसे भरत में नेपथ्य-रचना कहा है। जिसे भरत में नैपथ्य रचना पात्रों में रूप में समझा जाता है। इसके पुस्त अंलकार, अंगरचना और संजीव में चार प्रकार कहे गए हैं।

इस अभिनय का सम्बन्ध रंगमंच से है। क्योंकि इसका विधान नैपथ्य में पात्रों की सजावट के रूप से होता है। इस प्रकार अभिनय के विविध पक्षों का निरूपण हुआ है।

संस्कृति नाट्यशास्त्र में रंगमंच की व्यवस्था पर विस्तृत विचार किया है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण संगीतमकरन्द, भावप्रकाशन, संगीतकार, मानसार आदि ग्रन्थों में भी नाट्याभिनय के लिए रंगमंच के आकार-प्रकार का विवरण है। नाट्यशास्त्र तो इस विषय का महाकोश है।

Harshakumar